3. बिजनौर एवं नीवां कृषि प्रक्षेत्र :

डॉ. वेल्दी फिशर द्वारा जनपद लखनऊ के ग्राम बिजनौर एवं नीवां में दो कृषि फार्मों की स्थापना की गई। इन दोनों प्रक्षेत्रों की स्थापना कृषकों को कृषि और पशुपालन की नवीनतम जानकारी प्रदान करने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से की गई है। बिजनौर प्रक्षेत्र में 'युवा किसान विद्यापीठ' भी स्थापित किया।

4. वेल्दी फिशर चिल्ड्रेन्स अकादमी

इंडिया लिटरेसी बोर्ड की संस्थापिका के नाम पर एक सह–शिक्षा विद्यालय भी है, जो 'वेल्दी फिशर चिल्ड्रेन्स एकेडमी' के नाम से संचालित है। यह विद्यालय लिटरेसी हाउस परिसर में हाई स्कूल तक शिक्षा प्रदान करता है। विद्यालय उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त है, जिसमें लगभग 500 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत हैं। विद्यालय आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों को समग्र रूप से शिक्षा प्रदान करता है। अकादमी ऐसे जिम्मेदार नागरिकों को तैयार करने के लिए ईमानदारी से काम कर रही है, जो समाज की बेहतरी के लिए जीवन के हर क्षेत्र में काम कर सकते हैं।

5. राष्ट्रीय सेवा योजना (एन0एस0एस0)

युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 1993 में राष्ट्रीय सेवा योजना के लिए इण्डिया लिटरेसी बोर्ड को "प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास केन्द्र (टी0ओ0सी0)" घोषित किया। सम्प्रति इसका नाम बदल कर "सूचीबद्ध प्रशिक्षण संस्थान (ई0टी0आई0) कर दिया गया। संस्था वर्तमान समय में भी राष्ट्रीय सेवा योजना के लिए सूचीबद्ध प्रशिक्षण संस्थान के रूप में प्रशिक्षण शिविरों का सफल आयोजन कर रहा है।

6. उजाला मासिक पत्रिका :

नव साक्षरों के लिए एक मासिक पत्रिका "उजाला" नियमित रूप से लिटरेसी हाउस द्वारा इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के वेवसाइट पर अपलोड की जा रही है।

7. मेस और छात्रावास सुविधाएं :

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन प्रशिक्षण प्रदान करने, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, बैठकों, संगोष्ठियों आदि के आयोजन के लिए अपेक्षित बुनियादी सुविधाओं से सुसज्जित है।

- प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, बैठकों आदि के आयोजन के लिए तीन वातानुकूलित हॉल सहित अच्छी तरह से सुसज्जित व्याख्यान/सम्मेलन हॉल।
- एलसीडी प्रोजेक्टर, लैपटॉप, कम्प्यूटर, ऑडियो–विजुअल एड्स भी उपलब्ध हैं।
- पुरुष और महिला प्रतिभागियों/प्रशिक्षुओं के लिए अलग–अलग भोजन–आवास की सुविधा उपलब्ध है। छात्रावास 150 प्रतिभागियों को समायोजित कर सकता है।
- वीआईपी के लिए वातानुकूलित गेस्ट हाउस।
- अधिकारियों का छात्रावास,
- सामान्य छात्रावास,
- शैक्षिक दौरों के लिए परिवहन सुविधाएं,
- लगभग 400 लोगों के बैठने की क्षमता वाले 'कबीर थिएटर' सभागार सुविधा उपलब्ध है।
- बैंकिंग सुविधा ए.टी.एम. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया साक्षरता हाउस के मुख्य प्रवेश द्वार पर स्थित है और इंडियन बैंक की एक शाखा भी साक्षरता हाउस के परिसर में काम कर रही है।

8. साक्षरता संग्रहालय :

साक्षरता निकेतन में 'साक्षरता संग्रहालय' के निर्माण हेतु भारत सरकार से पाँच करोड़ रूपये का अनुदान स्वीकृत कराया गया। इस स्वीकृत अनुदान की प्रथम किश्त 2.50 करोड़ प्राप्त हो गई है। वास्तुविद द्वारा आगणन प्रस्तुत कर दिया है। अग्रिम कार्यवाही की जा रही है।

उपरोक्त के अतिरिक्त इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन, लखनऊ सरकारी विभागों, स्वैच्छिक एजेंसियों, निजी संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों आदि के कई महत्वपूर्ण गणमान्य व्यक्तियों की यात्राओं का साक्षी है। यह देश के सभी कोनों से लोगों को आकर्षित करता है यह संस्थान यूनिसेफ, प्लान इंडिया, सर्वशिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश, जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) लखनऊ, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, उ0प्र0, नेहरू युवा केंद्र संगठन, राष्ट्रीय सेवा योजना, राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, उ0प्र0 तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के विभिन्न विभागों की विभिन्न कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सम्मेलनों का स्थल भी रहा है।

: सम्पर्क :

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड

साक्षरता निकेतन, कानपुर रोड,
मानस नगर, लखनऊ-226023

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड (लिटरेसी हाउस)

साक्षरता निकेतन लखनऊ

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड (लिटरेसी हाउस)

लिटरेसी हाउस प्रौढ़ एवं अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का एक संस्थान है और इसे सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत वर्ष 1956 में इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, लिटरेसी हाउस के नाम से पंजीकृत कराया गया था। बोर्ड में प्रख्यात शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता, केंद्र और राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल हैं।

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की स्थापना संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की नागरिक श्रीमती वेल्दी होनसिंगर फिशर (1879–1980) द्वारा महात्मा गाँधी की प्रेरणा से की गई थी। 15 दिसम्बर, 1947 को वह महात्मा गाँधी से अन्तिम बार मिली थीं, उस समय महात्मा गाँधी ने उनसे भारत आने तथा भारत के गाँवों के लिए कार्य करने हेतु आग्रह किया था। वर्ष 1953 में श्रीमती वेल्दी फिशर भारत लौट आयीं और फरवरी 1953 से उन्होंने इलाहाबाद से अपनी यात्रा की शुरूआत की। उनका मुख्य उददेश्य निरक्षरता को समाप्त कर समाज को ज्ञान के आलोक से प्रदीप्त करना था। "अंधकार को क्यों धिक्कारें अच्छा है एक दीप जलायें" भारत में साक्षरता का प्रकाशपुंज बनकर विकसित हुआ।

उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री के0एम0 मुंशी ने डॉ. फिशर को लखनऊ आकर अपना काम स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया। माननीय राज्यपाल की मदद से, वह 1956 में लखनऊ में स्थानांतरित हो गईं और साक्षरता निकेतन (लिटरेसी हाउस) की स्थापना की, जो अभी भी विभिन्न रूपों और मंचों में साक्षरता कार्यक्रम का प्रसार कर रहा है।

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की स्थापना के मुख्य आधार चार 'F' थे जो निम्नवत हैः–

1. Functional Literacy (कार्यात्मक साक्षरता)
2. Food Production (खाद्य उत्पादन)
3. Family Life Education (परिवार एवं जीवन मूल्य की शिक्षा)
4. Fear Removal (भय निवारण)

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, लिटरेसी हाउस का प्रमुख कार्य वयस्क शिक्षा, विकास, अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन आयोजित करने, युवाओं के लिए कौशल विकास पाठ्यक्रम आयोजित करने, जनसंख्या और विकास सहित पारिवारिक जीवन शिक्षा गतिविधियों को चलाने वाले पदाधिकारियों का प्रशिक्षण रहा है।

लिटरेसी हाउस का भवन और परिसर का लेआउट प्रख्यात वास्तुकार श्री लॉरी बेकर द्वारा डिजाइन किया गया था। इसे एक भारतीय गाँव की तरह डिजाइन किया गया है। यह साधारण ईंट की इमारतों का एक समूह है। इसके बाद वर्ष 1966 में जनपद लखनऊ के ग्राम बिजनौर एवं नीवां में दो कृषि फार्म स्थापित किए गए। बिजनौर ग्राम में युवा किसान विद्यापीठ की स्थापना की गयी। दोनों प्रक्षेत्रों की स्थापना कृषकों को कृषि और पशुपालन की नवीन एवं विकसित विधियों का प्रदर्शन कर प्रशिक्षित करने, साक्षरता को खाद्य उत्पादन और किसानों एवं समुदाय की व्यक्तिगत जरूरतों से जोड़ने के लिए किया गया था।

प्रौढ़ शिक्षा एवं साक्षरता के क्षेत्र में लिटरेसी हाउस के माध्यम से उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. (श्रीमती) वेल्दी होन्सिंगर फिशर एवं इंडिया लिटरेसी बोर्ड को अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। जिसमें रेमन मैग्सेसे अवार्ड (1964) पहला जवाहार लाल नेहरू अवार्ड (1968), यूनेस्को का मोहम्मद रजा पहलवी अवार्ड (1978) एवं इराक अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार (यूनेस्को) 1983 प्रमुख है।

प्रौढ़ और सतत शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, जनसंख्या और विकास शिक्षा, पंचायती राज, युवा विकास गतिविधियों आदि के लिए शिक्षण–अधिगम सामग्री का प्रकाशन इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक रहा है। वर्तमान में लिटरेसी हाउस में पोस्टर, पैम्फलेट, स्लोगन और विशेष रूप से नव–साक्षरों के लिए पुस्तकों के 500 से अधिक शीर्षकों का भंडार है।

शिक्षार्थियों को प्रेरित करने के लिए एक प्रेरक और अनुकूल वातावरण बनाने के लिए वर्ष 1955 में साक्षरता निकेतन में सामाजिक शिक्षा के लिए कठपुतली का उपयोग शुरू किया गया था। अमेरिका के प्रसिद्ध कठपुतली विशेषज्ञ 'बिल एण्ड कोरा बेयर्ड' ने साक्षरता निकेतन में "शैक्षिक कठपुतली विभाग" की स्थापना में अपनी विशेषज्ञता का विस्तार किया। यह विभाग साक्षर भारत कार्यक्रम के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में प्रभावी रूप से योगदान देता है।

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड में एक बड़ा केंद्रीय पुस्तकालय स्थापित है जिसमें लगभग 50,000 पुस्तकों का भण्डार है, जिसमें एक बड़ा आराम देह प्रकाशयुक्त वाचनालय है। पुस्तकालय वयस्क और गैर– औपचारिक शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में काम करने वाले शोधार्थियों, गैर सरकारी संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच बहुत लोकप्रिय है।

सम्प्रति इण्डिया लिटरेसी बोर्ड निम्न संस्थाओं के माध्यम से अपने विचारों और उद्देश्यों को प्रसारित कर रही है।

1. राज्य संसाधन केन्द्र, उ0प्र0

भारत सरकार द्वारा सन् 1977 में संस्था की उपलब्धियों, पिछले अनुभवों और साक्षरता निकेतन में उपलब्ध संसाधनों और बुनियादी सुविधाओं को देखते हुए इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, साक्षरता निकेतन को प्रौढ़ शिक्षा के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रथम राज्य संसाधन केंद्र के रूप में मान्यता दी गयी।

राज्य संसाधन केंद्र, यू.पी. का मुख्य कार्य, विभिन्न स्तरों पर कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का आयोजन करना, साक्षर भारत कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना, कार्यक्रम का मूल्यांकन करना, अनुसंधान अध्ययन करना, क्षेत्र कार्यक्रम और विकास गतिविधियों को चलाना है।

वर्तमान समय में लखनऊ नगर निगम एवं जनपद उन्नाव के नवाबगंज विकास खण्ड में साक्षरता कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

2. जन शिक्षण संस्थान (जे0एस0एस0) लखनऊ, कानपुर एवं देहरादून

वर्ष 1981 और 1984 में भारत सरकार ने इण्डिया लिटरेसी बोर्ड, लिटरेसी हाउस को क्रमशः कानपुर और लखनऊ में श्रमिक विद्यापीठ की स्थापना की जिम्मेदारी सौंपी, इसके बाद 2000 में इसका नाम बदलकर जन शिक्षण संस्थान कर दिया गया। भारत सरकार ने वर्ष 2004 में देहरादून, उत्तराखंड के लिए इण्डिया लिटरेसी बोर्ड को एक और जन शिक्षण संस्थान स्वीकृत किया है।

जन शिक्षण संस्थान, (लखनऊ, कानपुर और देहरादून) की प्रमुख गतिविधियाँ, जिन्हें पहले श्रमिक विद्यापीठ के नाम से जाना जाता था, गैर–साक्षर, नव–साक्षर और शैक्षिक रूप से वंचित वर्गों के लिए तकनीकी मार्गदर्शन, कौशल विकास के लिए संसाधन सेवाएं प्रदान करने के लिए कौशल विकास पाठ्यक्रम आयोजित करना है।